डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 4 मई 2008 : मूल्य-पाँच रुपय

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-पहला | मई -2008 | मासिक पत्रिका

मंदिर
(गुरु अमरदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (अहमदाबाद) 3

प्रश्न-उत्तर
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के प्रश्नों के उत्तर 77 आर.बी. आश्रम 19

मेरा फौजी जीवन
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से एक यादगार दास्तान 23

धन्य अजायब
दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी 32

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
उप सम्पादिका : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : रेणु सचदेव, रोज़ी आनन्द, ज्योति सरदाना, मास्टर प्रताप सिंह, जस्सी व परमजीत
सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 9950-55 66 71, 94144-80 303 **दिल्ली में :** 9968 -24 19 31
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

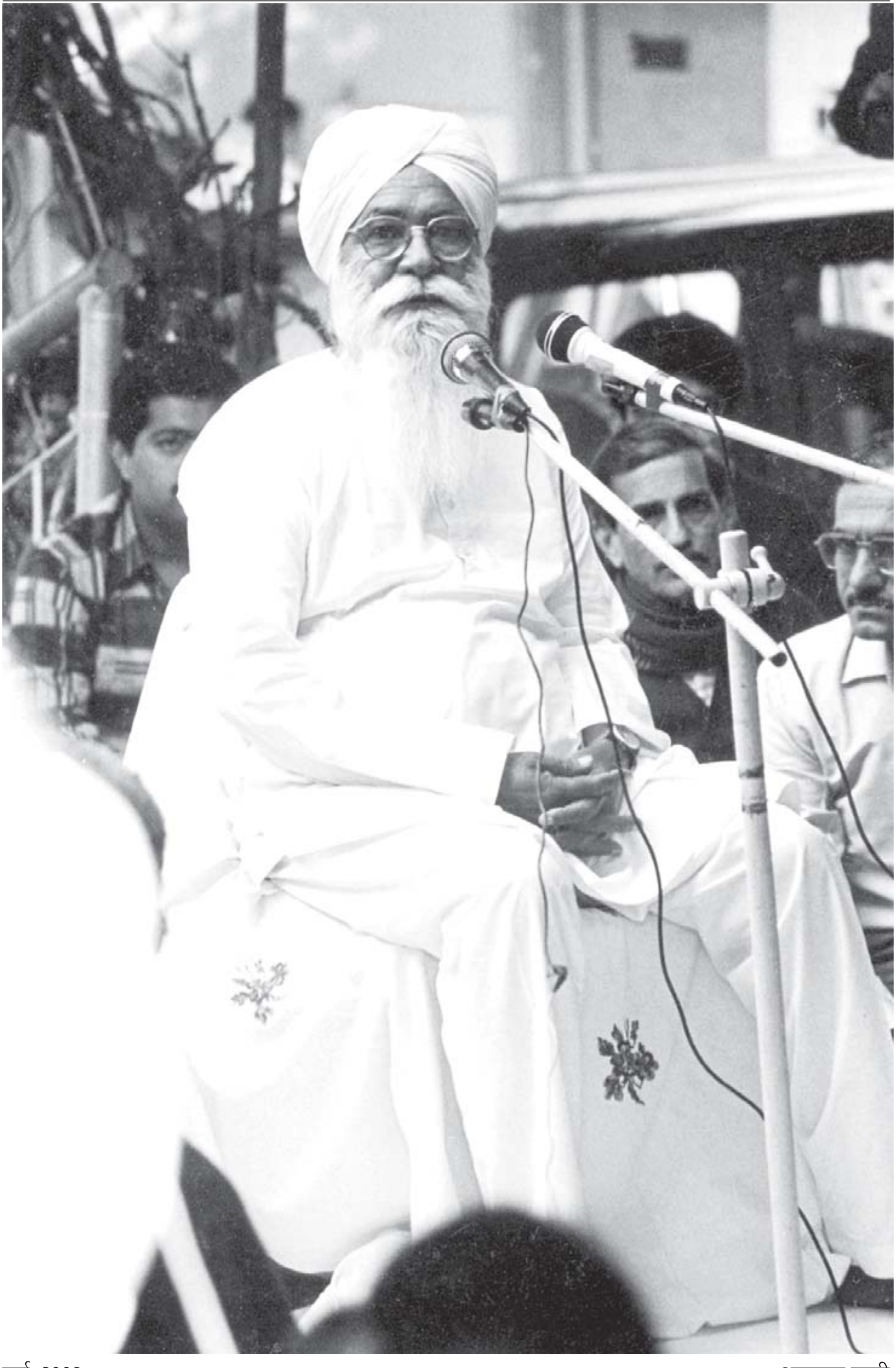

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मंदिर

गुरु अमरदेव जी की बानी

अहमदाबाद

मैं सावन रूप कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया, अपनी याद में बैठने का मौका दिया। जिसे परमात्मा भुला दे वह सोच भी नहीं सकता कि सतसंग में जाए या 'नाम' की कमाई करे! परमात्मा जिस पर रहम करता है उसे सबसे पहले सतसंग में लाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जिस आप भुलावे सोई भूले, सो बूझे जिसे बुझाइन्दा ।

बहुत से लोग महाराज कृपाल से आकर पूछते कि आपने **मंदिर** कहाँ बनाया है? महाराज जी कहा करते, "ऊपर आसमान है, नीचे धरती है सारी दुनिया ही **मंदिर** है।" मेरे पास भी बहुत से ऐसे प्रेमी आ जाते हैं जिनका कोई रिश्तेदार अमेरिका या कनाडा से आया हो तो वे लोग सोचते हैं कि चलो! इन्हें 16 पी.एस. में जो **मंदिर** बना है वह दिखा लाएं। लोग सोचते हैं कि पश्चिम के लोग इस मंदिर को देखने के लिए ही आते हैं। हर एक के अपने-अपने ख्याल होते हैं। उन्हें बहुत प्यार से बताया जाता है कि प्यारेयो! हम जहाँ बैठे हैं और आप जहाँ से चलकर आए हैं यह सारी दुनिया ही **मंदिर** है।

इसी तरह कुछ कर्मकान्डी और सामाजिक लोग इकट्ठे होकर गुरु अमरदेव जी महाराज के पास गए और उनसे कहा कि आप बहुत अच्छे भक्त हैं। जो भी आपके पास आता है आप उसे भक्ति सिखाते हैं। आपने कौन सा **मंदिर** बनाया है जहाँ आप माथा टेकते हैं और आने वाली संगत को भी माथा टिकवाते हैं?

गुरु अमरदेव जी के समय में योगी लोग बहुत साधना करते थे। योगी लोग अपने सेवकों को मूल चक्रों से अभ्यास शुरू करवाते थे।

योगी लोग आपसे कहते, ''आप कोई योग नहीं करते, किसी मंदिर की पूजा नहीं करते; आपके नास्तिकों वाले ख्याल हैं।''

गुरु अमरदेव जी प्यार से कहते हैं, ''हमारा शरीर, देह और वजूद ही **मंदिर** है; परमात्मा इसमें बैठा है। इस मंदिर में दाखिल होने के लिए हमें ऐसे महात्मा के चरणों में जाने की जरूरत पड़ती है जिसने इस **मंदिर** में जाकर परमात्मा की खोज़ की हो। हमारा सफर पैरों के तलवों से शुरू होकर सिर की चोटी पर जाकर खत्म होता है। इसकी दो मंजिले हैं; एक मंजिल आँखों तक और दूसरी मंजिल आँखों से ऊपर है। इसके छह चक्र हैं, इन छह चक्रों में 'नाम' नहीं। इन छह चक्रों का इन्तज़ाम करने वाले देवी-देवता ही इन चक्रों पर राज्य करते हैं।''

पिछले जमाने में लोगों की अच्छी सेहत और लम्बी आयु होती थी। योगी लोग अपने सेवकों को मूल चक्रों से अभ्यास शुरू करवाते थे। योगी लोग अपनी सारी उम्र लगाकर दोनों आँखों के बीच आज्ञा चक्र तक मुश्किल से पहुँचते थे लेकिन सन्त अपने सेवकों को अभ्यास यहीं से शुरु करवाते हैं। आजकल न सेहत अच्छी है और न आयु लम्बी है इसलिए कबीर साहब और गुरु नानकदेव जी ने जीवों को इस अथाह थका देने वाले साधनों से बचाया।

महाराज जी कहा करते थे, ''एक आदमी पहाड़ के बीच में खड़ा है, उसे पहाड़ की चोटी पर जाना है अगर वह अपना सफर ऊपर से शुरु करे तो बहुत आसान होगा। वह जल्दी ही पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाएगा अगर वह पहले जमीन पर आए और फिर ऊपर जाए तो उसे बहुत समय लग जाएगा।''

हमारी रुह और मन की सीट आँखों के पीछे है। महात्मा हमें इसी जगह से अभ्यास शुरु करवाते हैं। हर प्रेमी को अपने कर्मों के मुताबिक पहली बैठक में ही ज्योत और नाद का अनुभव होता है। सवाल अपने बर्तन का है इसे बढ़ाना सेवक का धर्म है। योगी लोग बड़ी कठिन साधना साधकर यहाँ पहुँचे लेकिन आगे का रास्ता न मिला।

जैसे एक लैम्प के सब कलपुर्जे ठीक हैं उसे केवल एक तीली लगाने की जरूरत पड़ती है, जल्दी ही प्रकाश हो जाता है। दूसरा लैम्प अभी तैयार नहीं उसमे बत्ती और तेल नहीं तो उससे प्रकाश लेने के लिए कुछ समय लग जाता है। इसी तरह जो शिष्य तड़प लेकर आते हैं उनका महात्मा के पास आना इस तरह होता है जैसे हम खुश्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें।

जैसे-जैसे हमें सतसंग की तपिश और महात्मा की सोहबत मिलती है, हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद होकर नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आ जाती है और तरक्की कर जाती है। सन्त-सतगुरु जिन्हें अपना लेते हैं, 'नाम' दे देते हैं उन्हें कभी नहीं छोड़ते। शिष्य उनका बिरद होता है, सन्त गरीब नवाज़ होते हैं।

वही बहादुर है। वही सूरमा है जो सतगुरु के जीवन काल में ही पूर्ण हो जाए, सतगुरु की खुशी प्राप्त कर ले अगर हम दुनियावी पिता के जीवन काल में अपने पाँव पर खड़े हो जाते हैं तो पिता को बहुत खुशी होती है कि मेरा बेटा अपने पाँव पर खड़ा हो गया है। इसी तरह सन्तों के दिल में हजारों माता-पिता जितना दर्द होता है। उन्हें भी खुशी होती है जब उनके शिष्य मन-इन्द्रियों की गुलामी से ऊपर आकर 'शब्द-नाम' को प्रकट कर लेते हैं।

मैं अपनी जिन्दगी का वाक्या बताया करता हूं। जब हमने नशहरा में वायरलैस ऑपरेटर का इम्तिहान दिया उस समय अंग्रेजों का राज्य था। वहाँ एक अंग्रेज साहब हमारा इम्तिहान लेने के लिए आया। हजूर की दया से मैंने काफी अच्छे नम्बर प्राप्त किए। हमारा उस्ताद मेरी पिछली तरफ आकर खड़ा हो गया कि जब इसका नाम बोलेंगे, मैं खुशी में इसे ऊपर उठा लूंगा।

जब अंग्रेज साहब ने मेरा नाम बोलकर नम्बर बताए और कहा कि इसे दो तनख्वाह इनाम में दी जा रही है। मैं तो अभी सुन ही रहा था कि मेरे उस्ताद ने मेरी बगलों में हाथ डालकर मुझे कुर्सी पर खड़ा कर

दिया अगर दुनियावी टीचर के दिल में इतनी खुशी है तो प्यारेयो! गुरु के दिल में कितनी खुशी होगी जो ब्यान नहीं की जा सकती।

गुरु यही कोशिश करता है कि मेरे प्यारे बच्चे मेरे जीवन काल में ही मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाएं ताकि मेरे जाने के बाद ये घबरा न जाएं! कहीं गुमराह न हो जाए! सन्त हमें यह नहीं कहते कि आज का काम कल पर छोड़ें और न ही यह आशा रखें कि आप इस जीवन के बाद सच्चखण्ड जाएंगे।

प्यारेयो! आपका मन आपके साथ धोखा कर रहा है। जो यहाँ अनपढ़ है वह आगे की दुनिया में जाकर भी अनपढ़ ही रहेगा। जो जीते जी महात्मा है वह मरने के बाद भी महात्मा ही रहेगा। वे लोग बहुत भूल में हैं जो आज का काम कल पर छोड़ देते हैं। आज भजन नहीं किया कल कर लेंगें या शाम को कर लेंगें! जो मन आज आपको यह सलाह दे रहा है वही मन कल भी आपके साथ ही होगा और आपको यही सलाह देगा। इसलिए सन्त कहते हैं :

जो कुछ करना सो अभी करना, अग्गे दा न भरोसा धरना।

महाराज जी बताया करते थे कि एक मुसलमान फकीर था। एक दिन उसके मन ने उसे भजन में रस नहीं आने दिया। उस फकीर ने अपने मन को छह महीने तक गरम पानी पिलाया कि तेरी यही सजा है अगर आप भी मन को ऐसी सजा दें कि कल तूने हमें भजन नहीं करने दिया आज हम भजन में दो घंटे लगाएंगे तो आपका मन कभी भी ऐसी शरारत नहीं करेगा।

गुरु साहब प्यार से समझाते हैं कि हमारा शरीर ही हमारा **मंदिर** है। परमात्मा ने यह मंदिर हर किसी को मुफ्त में दिया है अगर हम इस **मंदिर** में जाकर परमात्मा को खोजेंगे तो उसे जरूर प्राप्त कर लेंगे अगर हमारी कोई वस्तु अहमदाबाद में गुम है और हम उस वस्तु को मुम्बई में खोजेंगे तो कैसे प्राप्त कर लेंगे? वह वस्तु जहाँ गुम है अगर उसे वहीं खोजेंगे तो बहुत आसानी से प्राप्त कर लेंगे।

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं कि आप जंगलों-पहाड़ों में मारे-मारे क्यों फिरते हैं? वह परमात्मा तो आपके अंदर बैठा है। जैसे मेहंदी के पत्तों में रंग है। फूल के अंदर महक है और शीशे के अंदर रोशनी है। शीशा हमें हमारा ही चेहरा दिखाता है; हँसता देखेंगे तो हँसता नजर आएगा, रोता देखेंगे तो रोता नजर आएगा।

ऐह गुरु ज्ञान बताई।

यह भेद गुरुओं के हाथ में हैं। परमात्मा ने इसकी चाबी गुरुमुखों को दी हुई है। वह घर हमारी दोनों आँखों से थोड़ा सा पीछे है लेकिन हम उसे अपने आप नहीं खोज़ सकते। हमें तो यह भी नहीं पता की हमने कानों के जरिए अंदर जाना है या नाक के जरिए अंदर जाना है?

जिसका गृह तिस दिया ताला, कुंजी गुरु सौपाई।
अनिक उपाय करे नहीं पाए, बिन सतगुरु शरणाई।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई।।

जिस परमात्मा ने यह शरीर बनाया है ताला भी उसी का लगाया हुआ है और चाबी सन्तों के हवाले है। हम मन-बुद्धि से जो मर्जी उपाय कर लें अंदर दाखिल नहीं हो सकते। जो परमात्मा को शरीर से बाहर खोजते हैं यह तो इस तरह है जैसे बच्चा घर में है और ढ़िड़ोरा शहर में देते हैं। परमात्मा हमारे अंदर है और हम उसकी खोज़ बाहर करते हैं।

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''नाम ले लेना ही काफी नहीं, 'नाम' की कमाई भी करनी है। हम जब तक 'नाम' की कमाई नहीं करते तब तक हमारे अंदर से भ्रम दूर नहीं होते। जब हम अंदर जाकर अपनी आँखों से सच्चाई देख लेते हैं तब बेशक सारी दुनिया एक तरफ हो जाए तो भी हमारा दिल अगुवाही नहीं देता। हमारा यह शरीर हर **मंदिर** है और परमात्मा इसमें बसता है।''

गुरु प्रसादी वेख तू हरमंदर तेरै नाल ।।
हरमंदर शबदे खोजीए हर नामों लेहो समाल।।

आप प्यार से कहते हैं, ‘‘हमनें न घर-बार छोड़ना है, न बच्चों की जिम्मेवारी छोड़नी है और न ही समाज बदलना है। सन्तों-महात्माओं का काम रूहानियत देना होता है। जिन आत्माओं का परमात्मा के दरबार में वापिस बुलाने का फैसला हो चुका है, सन्त-महात्मा उन बिछड़ी आत्माओं को ‘शब्द-नाम’ के साथ जोड़ते हैं। सन्त-महात्माओं ने खुद अपनी जिंदगी में अनुभव पाया होता है और जो उनकी शरण में जाते हैं वे उन्हें अपनी तवज्जो से अनुभव देते हैं। वे खुद मुक्त होते हैं और अपनी शरण में आने वालों को भी मुक्ति का दान बख्शते हैं।’’

जब कोई पूरा महात्मा हम पर दया करे। हमें ‘नाम’ दे। हम उस ‘नाम’ की कमाई करके ही अपने अंदर इस **मंदिर** को खोज़ सकते हैं अगर हमें महात्मा न मिले तो हमें कैसे पता चलेगा कि खंड-बह्मांड कहाँ हैं, बह्म-पारबह्म किसे कहते हैं? कबीर साहब कहते हैंः

जात न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मुल्ल करो तलवार का, पड़ा रहन देयो म्यान।।

हमें यह नहीं देखना चाहिए कि यह महात्मा हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई है। जाति-पाति से कोई फर्क नहीं पड़ता। यह शरीर एक म्यान है। सन्तों के अंदर जो ताकत काम करती है वह ज्ञान है। हमने महात्मा के साथ खाना नहीं खाना, रिश्ता-नाता नहीं करना। हमने तो उनसे ‘शब्द-नाम’ का भेद लेना है।

आप हिस्ट्री पढ़कर देखें! रविदास जी चमार जाति के थे। राजपूतों की लड़की मीराबाई ने उन्हें अपना गुरु धारण किया। कबीर साहब मुसलमान जाति के थे। वीरसिंह, बघेलसिंह जैसे राजपूत राजाओं ने कबीर साहब को अपना गुरु धारण किया। हमें इतिहास गवाही देते हैं कि इसमें जाति- पाति पूछने की जरूरत नहीं।

आप प्यार से कहते हैं, ‘‘परमात्मा ने यह **मंदिर** हर एक को मुफ्त में दिया है। किसी पूर्ण महात्मा की शरण में जाएं तभी आप इस शरीर रूपी मंदिर में दाखिल हो सकते हैं।’’

मन मेरे शबद रपै रंग होय।। मन मेरे शबद रपै रंग होय।।

आप प्यार से कहते हैं कि 'शब्द-नाम' का रंग कभी नहीं उतरता। कबीर साहब कहते हैंः

जिनको सतगुरु रंग दिया, कभी न होए कुरंग।
दिन दिन बानी आगरी, चढ़े सवाया रंग।।

सच्ची भगति सच्चा हरमंदर प्रगटी साची सोय।।

यही सच्चा हर **मंदिर** है, इसमें जाकर ही हम सच्ची भक्ति कर सकते हैं। परमात्मा सच है जिसका कभी नाश नहीं होता। गुरु नानक साहब जपजी साहब शुरु करने से पहले कहते हैंः

आदि सच जुगादि सच है भी सच, नानक होसी भी सच।

वह परमात्मा पहले भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा। परमात्मा आदि-जुगादि से चला आ रहा है। ऐसा नहीं की सतयुग में वह गद्दी किसी और के पास थी या आगे किसी और के पास चली जाएगी।

हरमंदर एह सरीर है ग्यान रतन परगट होय।।

आप कहते हैं, ''हम अपने हाथों से बनाए हुए **मंदिर**, मस्ज़िद और गुरुद्वारों की कितनी कद्र करते हैं। वहाँ शराब नहीं पीते, मीट नहीं खाते और कोई बुरा कर्म नहीं करते अगर गलती से किसी दीवार में कोई दरार आ जाए तो हम मालिक के बनाए हुए हजारों मंदिरों को गिरा देते हैं फिर अपने आपको शहीद, कौम के रखवाले कहलाते हैं।''

ठंड़े दिल से सोचें! अगर इंसान को मारने से ही शहीद होते तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? जब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का बँटवारा हुआ तब कितनी कत्लोगारत हुई। उस समय लोगों ने जितना मुँह काला किया इतना तो देखने में कभी नहीं आया। प्यारेयो! किसी को मारने से शहीद नहीं होते। सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं :

जे तू परियां दी सिख, हिया न ठाईं कहीं दा।

अगर आपको परमात्मा से मिलने का शौक है तो आपको परमात्मा की खलकत से भी प्यार करना पड़ेगा।

आप कहते हैं, ''मैं जिस **मंदिर** की तारीफ करता हूं वह आपका शरीर है। आपको मालिक से मिलने का ज्ञान इस शरीर के अंदर जाकर ही होगा। हिन्दु महात्मा इसे नर-नारायणी देह कहते हैं। इसके अंदर जाकर ही हम नर से नारायण बन सकते हैं। हम बाहर के **मंदिर**, मस्जिद, गुरुद्वारों में परमात्मा की भक्ति के मुत्तालिक जो सुनते हैं उससे हमारे दिल में शौक, विरह और तड़प पैदा होती है। मुसलमान भाईयों ने पाँचों वक्त मस्जिद में जाना तो शुरु कर दिया लेकिन अंदर नहीं गए।'' फरीद साहब कहते हैं:

तू कदे चल न आया, पंजे वक्त मसीत।

गुरु साहब कहते हैं कि कभी इस **मंदिर** में भी दाखिल हुए जो परमात्मा ने बनाया है? महात्माओं का मकसद तो इतना ही होता है कि जैसे हम बाहर के मंदिरों की कद्र करते हैं वैसे ही इस **मंदिर** की भी कद्र करें। हम इस मंदिर में शराब-मीट डालते हैं, बुरे कर्म करते हैं लेकिन जो **मंदिर** हमने अपने हाथों-पैरों से बनाए हैं उनमें हम धूप जलाते हैं, जूते लेकर नहीं जाते।

परमात्मा ने हमें यह **मंदिर** मुफ्त में दिया है लेकिन हम बुरे कर्म करके नास्तिक हो जाते हैं फिर कहते हैं कि मुझे मंदिर में जाते हुए चालीस साल हो गए परमात्मा नहीं मिला। कभी सोचा! गंदी जगह तो कुत्ता भी नहीं बैठता, वह भी पूँछ से जगह साफ कर लेता है। हमारे घर में किसी रिश्तेदार या भाई-बहन ने आना हो तो हम घर को साफ करते हैं कि वह हमारे घर को बुरा न कह जाए। सच्चखंड में रहने वाला परमात्मा पवित्र है। वह विषय-विकारों में लिपटे हुओ में कैसे दाखिल होगा? उसे जो जगह साफ दिखाई देती है वह वहाँ जाकर बैठ जाता है।

मनमुख मूल न जाणनी माणस हरमंदर न होय।।

जो लोग अपने जीवन में कभी पूर्ण महात्मा से मिले ही नहीं वे इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं कि इंसान का शरीर ही हर **मंदिर** है। वे सोचते हैं! कि परमात्मा किसी सोने के मंदिर में बैठा है या समुद्र की तह में बैठा है। वे लोग लम्बी-लम्बी यात्राएं करने के लिए चल पड़ते है शायद हमें बाहर ही परमात्मा मिल जाएगा।

घर दर छोड़े आपना, पर घर झूठा जाए।
चोरे वाँगु पकड़िए, बिन नामे चोटा खाए।
जिन्नी घर जाता आपना, से सुखीए भाई ।।

चोर को अदालत इसलिए सजा देती है कि वह अपना घर छोड़कर पराए घर में गया। इसी तरह हम जो भी समय जंगलों, पहाड़ों में लगाते हैं अगर वही समय हम अपने शरीर में दाखिल होने में लगाए तो हम कामयाब हो सकते हैं। जो लोग मानने के लिए तैयार नहीं कि शरीर ही हर **मंदिर** है? वे सोचते हैं! हमें यह शरीर शराबों-कबाबों, ऐशों-ईशरतों के लिए मिला है। यह ख्याल कुराहे डालने वाला है।

हरमंदर हर जीओ साजया रखया हुकम सवार।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ‘‘मैं जिस **मंदिर** का जिक्र करता हूँ वह किसी दुनियावी कारीगर ने नहीं बनाया, वह ईटों-पत्थरों का बना हुआ नहीं है; वह तो परमात्मा ने बनाया है।’’

हम देखते है जैसे इंजन में पेट्रोल डालते हैं तो वह चलता है अगर उसमें ताकत देने वाला करंट न हो तो सारे कलपुर्जे होते हुए भी इंजन हरकत नहीं करता। जब तक परमात्मा की ताकत हमारे शरीर में है तब तक माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त हमसे प्यार करते हैं।

जब परमात्मा शरीर में से शब्द की किरण उठा लेता है तो कोई इसकी कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। थोड़ी ही देर में शरीर में से बदबू आने लगती है। आँखें वैसी ही होती हैं लेकिन हरकत नहीं करती। कान होते हैं लेकिन सुनते नहीं। मुँह होता है लेकिन कुछ खा

नहीं सकते। जिस कीमती जौहर से हमारी इतनी शान बनी हुई थी सन्त हमें उसी के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।

धुर लेख लिखया सो कमावणा कोय न मेटणहार।।

परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है। जब जीव माता के पेट में होता है यह तभी तय हो जाता है कि इसे गुरु मिलेगा या नहीं? 'नाम' मिलेगा या नहीं? गुरु मिलेगा तो क्या इसे विश्वास आएगा? क्या यह कमाई करेगा? क्या यह सतसंग में जाएगा?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दुःख-सुख, अमीरी-गरीबी, बीमारी-तंदरूस्ती पहले से ही तय हो जाती हैं लेकिन घटना समय पर आकर घट जाती है। जीव को इस घटना का ज्ञान नहीं होता इसलिए यह परेशान है, लाचार है।''

धुर लेख लिखया न मेट ही।

आप कहते हैं कि यह धुर का लेख है। किसका दिल नहीं करता कि वह परमात्मा से न मिले? यह लेख पहले से ही लिखा हुआ है अगर परमात्मा अंदर से चाबी न घुमाए तो चाहे महात्मा घर में ही पैदा हो जाए या पड़ोस में ही रहने लग जाए हमें विश्वास ही नहीं आएगा। यह भी कर्मों के मुताबिक ही फैसला होता है कि इसे कोई परमात्मा का प्यारा मिलेगा या नहीं?

सूरज रोशनी मुफ्त देता है। परमात्मा हवा, पानी मुफ्त देता है। महात्मा अपनी तालीम मुफ्त में ही बाँटते हैं, कोई फीस नहीं लेते। महात्मा की यह पक्की निशानी होती है कि वह अपने तन के लिए संगत की एक कौड़ी भी खर्च करके खुश नहीं होते। वे अपने गुजारे के लिए खेती करें, दुकानदारी करें चाहे नौकरी करें।

हम सोचते हैं कि सन्त 'नाम' तो आसानी से दे देते हैं। प्यारेयो! फिर तो कबीर साहब या गुरु नानक देव जी आए ही काफी थे। सारी दुनिया ही सच्चखंड वापिस चली जाती।

हम गुरु नानक देव जी की हिस्ट्री पढ़ते हैं कि दुनिया तो आपको परमात्मा समझकर पूजती रही लेकिन आपके माता-पिता आपको व्यापार करने के लिए ही कहते रहे। गुरु साहब कहते हैः

भागहीन गुरु ना मिले, निकट बैठ्या नित पास।

शबद चीन सुख पाया सच्चै नांय प्यार।।

यह दुनिया अशान्ति का घर है अगर किसी ने शान्ति प्राप्त की तो अंदर जाकर 'शब्द-नाम' की कमाई से ही की।

जो ब्रह्माण्डे सो ही पिण्डे, जो खोजे सो पावे।

हरमंदर शबदे सोहणा कंचन कोट अपार।।

यह शरीर हाड़-माँस, चमड़े का ही बना हुआ नहीं है; यह अंदर से बहुत खूबसूरत है। आज मैंने विदेशी प्रेमियों के सतसंग में बताया था जो ताकत सन्तों के अंदर काम करती है वह 'शब्द' है। 'शब्द' बहुत सुंदर और प्यारा है। हजरत वारेशाह कहते हैं, ''शरीयत वाले लोगों को इसका ज्ञान नहीं होता।'' महात्मा उसी स्वरूप की महिमा गाते हैंः

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे, हो जाए दूर परन्दरी।

आप कहते हैं, ''तू अंदर जाकर देख! परमात्मा ने अंदर कितनी खूबसूरती रखी हुई है। स्थूल दुनिया से सूक्ष्म दुनिया सुंदर और प्यारी है। सूक्ष्म दुनिया से कारण दुनिया सुंदर है। इनसे ऊपर वाले मण्डल बहुत सुंदर और प्यारे हैं जो बयान नहीं किए जा सकते।''

हरमंदर एह जगत है गुर बिन घोर अंधार।।

आपने पहले तो कहा कि यह शरीर हर **मंदिर** है। जब हम इस मंदिर के अंदर चले जाते हैं, परमात्मा को प्रकट कर लेते हैं फिर हमें कण- कण में परमात्मा नजर आता है। हमें लगता है कि जो भी हमारे सामने बैठे हैं वे सब परमात्मा के **मंदिर** हैं; चाहे वे पशु हैं या पक्षी हैं।

जिन्हें ऐसा दिखाई देने लग जाता है क्या वे इंसानों, भेड़ों-बकरियों का कत्ल करेंगे, किसी का मीट खाएंगे? जान हर एक को प्यारी है। सुअर की योनि सबसे निम्न है जब उसे मारते हैं तो वह भी बचने की कोशिश करता है। यह सारा जगत ही उस परमात्मा का हर **मंदिर** है।

गुरु बिन घोर अंधार, गुरु बिन समझ न आवे।
गुरु कर सोच विचार, गुरु कर रे मन मेरे।।

आप कहते हैं गुरु के बिना समझ नहीं आती। हमें कदम-कदम पर गुरु की जरूरत होती है। सबसे पहले हमारे माता-पिता ही हमारे गुरु होते हैं, माता हमें हमारे घराने की बोली सिखाती है। बहन-भाई हमारे गुरु बन जाते हैं वे चलने में हमारी मदद करते हैं। स्कूल, कालेज में जाते हैं तो कई अध्यापको से वास्ता पड़ता है। हमें हर काम में गुरु की जरूरत पड़ती है अगर दुनिया के ज्ञान के लिए हमें गुरु की जरूरत है तो रूहानियत में, शरीर के अंदर जाने के लिए तो हम बिल्कुल ही बेखबर हैं लेकिन हम कहते हैं कि इस मसले को हल करने के लिए हमें किसी गुरु-पीर की जरूरत ही नहीं। सोचकर देखें! हम कैसे कामयाब हो सकते हैं, कैसे परमात्मा को पा सकते है?

दूजा भाओ कर पूजदे मनमुख अंध गवार।।

हम अन्धे, मूर्ख और गँवार हैं। हर कोई कहता है कि मैं जिस तरीके से भक्ति करता हूँ यही ठीक है। हम हमेशा ही एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं अगर हम सब 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो हमारा किसी से भी झगड़ा नहीं रहेगा। परमात्मा एक है। परमात्मा ईश्वरकृत है। परमात्मा से मिलने का साधन-तरीका भी एक है। उस रास्ते को न कोई कम कर सकता है न बढ़ा सकता है और न तब्दील ही कर सकता है। वह उतना ही पुराना है जितना परमात्मा पुराना है।

जित्थै लेखा मंगीऐ तित्थै देह जात न जाय।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''हम जाति-पाति के लिए लड़ते-झगड़ते हैं लेकिन परमात्मा के दरबार में हमारी जाति-पाति और देह भी नहीं

जाएगी। वहाँ हमारे अमल और करतूतें देखी जाएंगी। वहाँ न हिन्दुओं को धक्के पड़ते हैं न मुसलमानों को आगे बुलाया जाता है न इसाईयों का आदर होता है। वहाँ हमारे अमलों पर ही फैसला होता है।''

जात पात पूछे न कोए, हर को भजे सो हर का होए।

आसमान पर सूरज है, सूरज की कोई जाति नहीं। सूरज की लाखों किरणें जमीन पर पड़ती हैं। सूरज हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और इसाई सभी को रोशनी और गर्मी देता है। उसका किसी मुल्क और जाति-पाति से कोई मतलब नहीं। जब सूरज की कोई जाति नहीं तो किरण की क्या जाति हो सकती है। इसी तरह परमात्मा भी हर एक से प्यार करता है। जब परमात्मा की कोई जाति नहीं तो हमारी आत्मा की क्या जाति हो सकती है? कबीर साहब कहते हैंः

डूबोगे रे बाप रे, बोह लोगन की कान।
तब कुल किसका लाजसी, जब चक धरयो मसान।।

प्यारेयो! जब कब्र में दबा दिए गए या अग्नि में फूँक दिए गए तो वहाँ कौन हमारी जाति पूछेगा? किसी की जाति आग में जल जानी है तो किसी की जाति मिट्टी में दबाई जानी है। परमात्मा के दरबार में न हमारी देह जाएगी न हमारी जाति जाएगी जिसके लिए हम दिन-रात लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

साच रत्ते से उबरे दुखीए दूजै भाय।।

जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं उनका उद्धार हो जाता है। जो जाति-पाति के झगड़े करते रहते हैं वे दुःखी आते हैं और इस संसार से दुःखी ही चले जाते हैं।

हरमंदर मह नाम निधान है ना बूझह् मुगध गवार।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''मैं जिस **मंदिर** का जिक्र करता हूँ उसमें किसी धातु या पत्थर की मूर्ति नहीं रखी हुई। उसमें सारे खजानों

का मालिक 'नाम' है। वह 'नाम' हिन्दी, पंजाबी या और किसी भाषा में नहीं लिखा जाता। वह बिना लिखा कानून और बिना बोली भाषा है।''

गुर परसादी चीनया हर राखया उरधार।।
गुर की बाणी गुर ते जाती जे शबद रत्ते रंग लाय।।

गुरु साहब सबसे पहले हमें पूरे गुरु की खोज फिर गुरु से 'नाम' लेकर 'नाम' की कमाई करने के लिए कहते हैं। गुरु हमें शिष्य बनाकर सरोवर में स्नान करने और पढ़-पढ़ाई करने के लिए नहीं कहता। गुरु हमें शरीर के अंदर जाने का साधन और तरीका बताता है। वह केवल तरीका ही नहीं बताता बल्कि कदम-कदम पर हमारी मदद भी करता है अगर वह मदद न करे तो हम अंदर जा ही नहीं सकते।

गुरु हमें उसके साथ जोड़ता है जिसे गुरु नानकदेव जी बानी, अकथ-कथा और हरि-कीर्तन कहते हैं। मुसलमान फकीर उसे कलमा, बाँगे-असमानी कहते हैं। हिन्दू महात्मा उसे आकाश-वाणी, राम-नाम और राम-धुन भी कहते हैं। यह बानी हिन्दी, पंजाबी में नहीं लिखी जाती। यह बानी सबके अंदर समाई हुई है। यह बानी न तो पाँच सौ साल पुरानी है न ही दो युग पुरानी है। आप कहते हैं:

बानी वजी चौह जुगी, सच्चो सच सुणाए।

यह बानी सतयुग, त्रेता, द्वापर में भी थी आज भी है और आगे भी रहेगी। यह बानी सच का, 'नाम' का होका देती है।

सतगुरु की बानी सब माहे समानी, आप सुनी ते आप वखानी।

यह बानी सबके अंदर समाई हुई है। इसमें हिन्दू-मुसलमान का सवाल नहीं। महात्मा दिन-रात इस बानी को सुनते हैं और जो भी इनके सम्पर्क में आता है उसे इस बानी के साथ जोड़ देते हैं।

पवित पावन से जन निरमल हर कै नाम समाय।।
हरमंदर हर का हाट है रखया शबद सवार।।
तिस विच सौदा एक नाम गुरमुख लैन सवार।।

वही जन पवित्र हैं जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। हमें नाम का सौदा महात्मा से ही मिल सकता है। गुरुमुख लोग इस देह में ही 'शब्द-नाम' का सौदा प्राप्त करते हैं।

हरमंदर मह् मन लोहट है मोहया दूजै भाय।।
पारस भेटिऐ कंचन भया कीमत कही न जाय।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''इस **मंदिर** के अंदर मन भी बैठा है। इस मन को लोहा या मनूर कहकर बयान किया है। पता नहीं इसने हमें अंदर किस तरह गुमराह कर देना है! अगर हम लोहे को पारस के साथ लगा दे तो यह कंचन बन जाता है। इसी तरह अगर मन को 'शब्द-नाम' का रस दे दिया जाए तो यह हमारा मित्र बन जाता है, हमारी मदद करता है।''

हरमंदर मह् हर वसै सरब निरंतर सोय।।

आप कहते हैं कि इस **मंदिर** में परमात्मा खुद बसता है। महात्मा यह नहीं कहते कि परमात्मा केवल उन्हीं में बसता है। महात्मा ने परमात्मा को अपने ऊपर मेहरबान किया होता है। हमने अभी परमात्मा को प्रकट नहीं किया, हम इस कोशिश में लगे हुए हैं। सारी धरती के अंदर पानी है। कहीं सौ फीट है तो कहीं पचास फीट है लेकिन प्यास उन्हीं की बुझती है जो नल वगैरहा लगा लेते हैं, कुआँ खोद लेते हैं।

नानक गुरमुख वणजीऐ सच्चा सौदा होय।।

गुरु अमरदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बहुत प्यार से समझाया है कि गुरुमुख लोग इस शरीर में रहकर 'नाम' का सच्चा व्यापार करते हैं। यही सच्चा सौदा है कि अपने फैले ख्याल को नौं द्वारों से निकालकर आँखों के पीछे आएं। आपको यहाँ से सच्चा सौदा मिलेगा। यहाँ से नीचे इन्द्रियों के भोग हैं, विषय-विकारों की लज्जतें हैं।

सिमरन करने से आत्मा का शीशा साफ हो जाता है। महात्मा हमें बताते हैं कि हमें चलते-फिरते, उठते-बैठते सिमरन पर जोर देना चाहिए।

सिमरन की कोई कीमत नहीं लगती। काम तो हमने हाथों से करना होता है। हम गाड़ी में बैठे हुए, हवाई जहाज में बैठे हुए, घर का कारोबार करते हुए बड़ी आसानी से सिमरन कर सकते हैं। हमें सिमरन की कद्र करनी चाहिए। सिमरन हमारी जुबान पर इतना चढ़ जाना चाहिए कि अगर हम सपने में बड़-बड़ाएं तो भी मुँह से सिमरन ही निकले। कबीर साहब कहते हैंः

सुपने हूं बरड़ाईके, जह मुख निकसे राम।
ताके पग की पनही, मेरे तन को चाम।।

हमें भी चाहिए कि गुरु अमरदेव जी महाराज के कहे अनुसार प्रेम-प्यार से 'शब्द-नाम' की कमाई करें। जितना हमारा शरीर पवित्र होगा उतना ही मन पवित्र होगा, जितना मन पवित्र होगा उतने ही ख्याल पवित्र होंगे अगर हमारे ख्याल पवित्र होंगे तो हम 'सुरत-शब्द' की कमाई ज्यादा कर सकेंगे।

h c h

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-उत्तर

77 आर.बी.आश्रम (राजस्थान)

प्रश्न : सन्तजी! कल सुबह जब हम अभ्यास के लिए बैठेंगे क्या आप हमारे लिए सिमरन बोलेंगे? आज जब मैं अभ्यास में बैठा तो मुझे बहुत ही अच्छा अनुभव हुआ। मुझे ऐसा अनुभव सन् 1969 में सावन आश्रम में हुआ था। बाबा जी ने मुझसे कहा कि मैं अपने प्राणों का इस्तेमाल कर रहा हूं। मुझे समझ नहीं आया कि मैं यह ठीक कर रहा हूं या गलत कर रहा हूं?

उत्तर : आपके अंदर ऐसे विचार गर्मी की वजह से आ रहे हैं, यहाँ बहुत ज्यादा गर्मी है; रात को यहाँ ठंडक होती है। अगली बार आप भजन में दूसरे लोगों से दूर बैठें ताकि आपके पास हवा आती रहे और आपका दिमाग शान्त रहे।

प्रश्न : हम लोग कुछ दिनों के लिए आपके पास आए हुए हैं क्या हमारी यह पवित्र यात्रा सच्चखंड पहुँचने को छोटा सा रूप है?

उत्तर : हाँ भई! गुरु अर्जुन देव जी परमात्मा को याद करते हुए कहते हैं, ‘‘हे परमात्मा! मैं नहीं जानता कि आप मेरे लिए क्या कर रहे हैं लेकिन आपने मुझे जिस पहुँची हुई आत्मा से मिलवाया है उसकी वजह से ही मैं आप तक पहुँच सका हूँ।’’ जब यह आत्मा सच्चखंड पहुंचती है तो इसे अहसास होता है कि मैं गुरु की वजह से ही परम पिता परमात्मा से मिल सकी हूँ।

गुरु अर्जुन देव जी फिर कहते हैं, ‘‘हे मेरे सतगुरु! हे मेरे परमात्मा! मुझमें कोई गुण नहीं है। मैं आपकी दया-मेहर से ही आपके चरणों में पहुँच सका हूँ।’’ जब परमात्मा जीव पर दया करता है तो उसका मिलाप सन्त-सतगुरु से करवाता है ताकि यह आत्मा परमात्मा से मिल सके।

जब हम सतगुरु से मिलते हैं तो सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' का दान देकर हमसे भजन-सिमरन करवाते हैं। हम भाग्यशाली हैं परमात्मा ने हम पर दया की जो हम इस पवित्र यात्रा पर आ सके। इस यात्रा में हमनें सिर्फ परमात्मा को ही याद करना है। आप जानते हैं कि काल ने किस तरह दुनिया को अपने जाल में फँसा रखा है। इस युग में परमात्मा की तरफ आना कितना मुश्किल है।

हमारी हालत उस छोटे बच्चे की तरह है जो अभी चलना सीख रहा है, वह गिरता है चलने की कोशिश करता है फिर गिर जाता है और रोने लग जाता है। माता-पिता देखते हैं कि उनका बच्चा बहुत कोशिश करने के बाद भी किसी जगह नहीं पहुँच पा रहा तो वे उसे अपनी बाँहों में उठाकर उस जगह पहुँचा देते हैं जहाँ वह पहुँचना चाहता है।

इसी तरह हम सिमरन करते हैं भजन पर बैठते हैं जब भजन नहीं बनता तो रोते हुए गुरु के आगे प्रार्थनाएं करने लगते हैं। गुरु देखता है कि हम चलने की पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन उस तक नहीं पहुँच पा रहे तो वह हमारी मदद करता है। हमें अपनी गोद में उठाकर उस जगह पहुँचाता है जहाँ हमारी आत्मा को पहुँचना चाहिए।

अगर हम 'नामदान' मिलने के बाद परमार्थ के रास्ते पर चलते रहें और गुरु के कहे अनुसार उसी जोश के साथ भजन-सिमरन करते रहें तो हम सिर्फ अपनी ही नहीं और भी सैंकड़ो आत्माओं को मुक्ति दिला सकते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहले लग्गी, तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़॥

सभी सतसंगी जानते हैं कि मन हमें किस तरह नचाता है। यह मन हमें कुछ समय भजन-सिमरन करने देता है फिर सिमरन से दूर कर देता है। हम फिर अपने आपको भजन-सिमरन के लिए तैयार करते हैं और करीब दस दिन लगातार भजन-सिमरन पर बैठते हैं लेकिन यह मन हमें फिर सिमरन से दूर करके खुश्क कर देता है।

जब किसी प्रेमी को 'नामदान' मिल जाता है तब उसे अपने मन की बात सुननी बन्द कर देनी चाहिए अगर वह मन की बात मानेगा तो अपने लिए बहुत बड़ी मुश्किल खड़ी कर लेगा। आपका मन आपके साथ है लेकिन आपने उसकी बात नहीं माननी अगर आप उसकी बात मानेंगे तो आज का भजन-सिमरन कल पर डाल देंगे। यही मन कल भी आपके साथ होगा और आपको भजन-सिमरन नहीं करने देगा। प्रेमी सतसंगी को पूरी ताकत के साथ अपने मन से लड़ना होगा, तभी वह भजन-सिमरन कर सकेगा।

अगर हम कोई दुकान चला रहे हैं तो हम दस दिन के लिए दुकान बंद नहीं कर सकते ऐसा करने से हमारा व्यापार बंद हो जाएगा और हमें बहुत नुकसान हो जाएगा अगर हम कोई नौकरी कर रहे हैं तो हम वहाँ से दस दिन के लिए गैरहाजिर नहीं हो सकते ऐसा करने से हमारा मालिक नौकरी से निकाल देगा। हमें हमेशा दुनिया के धंधों की चिन्ता लगी रहती है। क्या हमनें कभी अपने भजन-सिमरन की तरफ ध्यान दिया कि हम अपना कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं? अगर हम भजन-सिमरन नहीं करते तो सतगुरु की दया प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रश्न : जब मैं भजन-सिमरन के लिए बैठता हूँ, अपने मन के साथ लड़ता हूँ तब मेरे सिर में दर्द होने लगता है लेकिन जब मेरा भजन बन जाता है तो मुझे परम आनन्द मिलता है?

उत्तर : आप भजन-सिमरन के लिए बैठते हैं लेकिन मन के ऊपर काबू नहीं रख पाते। भजन पर बैठते समय आपके अंदर बहुत से विचार आते हैं। जब तक आप अपने मन के साथ नहीं लड़ेंगे, बार-बार सिमरन नहीं दोहराएंगे तब तक अपने मन को काबू में नहीं कर सकते। उस समय आप अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच केन्द्रित करें।

आप भजन पर बैठते जरूर हैं लेकिन सिमरन नहीं कर पाते और घड़ी देखकर कह देते हैं कि मैंने एक या दो घंटे भजन किया है असल में आपने भजन किया ही नहीं होता।

आप एक चित्रकार हैं अगर आपका पूरा ध्यान आपके काम में नहीं होगा तो आप चित्रकारी नहीं कर सकते। आपका ध्यान इधर-उधर लगा होता है इसलिए आप अपनी अंतर्रात्मा से सिमरन नहीं कर पाते।

प्रश्न : मैं जब भजन-सिमरन के लिए बैठता हूँ तो मेरा ध्यान कभी दाईं तरफ कभी बाईं तरफ तो कभी किसी और तरफ चला जाता है। क्या ऐसा होने देना चाहिए या मुझे अपने ध्यान को बीच में ही केन्द्रित करना चाहिए?

उत्तर : हमने हमेशा ही अपने ध्यान को बीच में केन्द्रित करना है। मैंने आपको कई बार उदाहरण दिया है कि आर्मी में हमें राइफल चलाना सिखाया जाता था। हमसे कहा जाता था कि हमारा शरीर, राइफल और निशाना स्थिर होना चाहिए अगर हमारा शरीर, राइफल और निशाना एक ही दिशा में स्थिर नहीं होंगे तो हम सही निशाना नहीं लगा सकेंगे। इसी तरह जब हम भजन-सिमरन के लिए बैठते हैं, हमारा ध्यान दोनों आँखों के बीच केन्द्रित नहीं होता तो हमारा ध्यान कभी दाईं तरफ, कभी बाईं तरफ चला जाता है और हम अपने निशाने तक नहीं पहुँच पाते।

हमारे गुरु ने हमें 'नामदान' के समय जो निशान बताया है अगर हम उस निशान तक नहीं पहुंचते तो हम भजन का आनन्द नहीं पा सकते। जब हम अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच में केन्द्रित करेंगे तो धीरे-धीरे हमारा मन स्थिर हो जाएगा और हमें सिमरन का आनन्द आने लगेगा। हमें भजन पर इस तरह बैठना चाहिए जिसमें हम बिना हिले-डुले लम्बे समय तक बैठ सकें।

प्रश्न : भजन में दर्द को कम करने का या उससे ऊपर उठने का क्या तरीका है?

उत्तर : सिमरन।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से एक यादगार दास्तान

मेरा फौजी जीवन

मैंने बचपन में ही अपने परिवार के लोगों को बता दिया था कि मैं अपना गुजारा स्वयं करूँगा। उस समय दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था, हिटलर आगे बढ़ रहा था। फौज में भर्ती चल रही थी; सरकार जबदस्ती फौज में भर्ती कर रही थी। उस समय लोग बीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन फौज में नहीं जाना चाहते थे।

उस समय मेरी आयु बहुत कम थी। मैं खुशी से फौज में भर्ती हुआ। भर्ती करने वाला अफसर मुझे देखकर खुश हुआ, उसने मेरी पीठ ठोककर मुझे शाबाशी दी। उन दिनों मुझे एक साधु मिला जिसने कहा, ''जो सैनिक लड़ाई में मारा जाता है वह सीधा स्वर्ग में जाता है।'' मैंने लड़ाई के मोर्चे पर जाने के लिए अपना नाम लिखवा दिया।

लड़ाई में जाने से पहले डाक्टरी जाँच होती थी। डाक्टर कमजोर जवानों को दूध दिए जाने की सिफारिश करता था। तब हमारे कमांडर ने कहा, ''ये सब बलि के बकरे हैं सभी को आखिरी दिनों में दूध पीने के लिए दिया जाए।''

फौज में बहुत आजाद किस्म के लोग होते हैं। मैं वहाँ पर दूसरे लोगों से अलग रहता और हे राम! हे गोविंद ! का जाप करता रहता। धीरे-धीरे

मेरे साथियों को यह बात मालूम हो गई; वे सभी मुझे बहुत श्रद्धा से देखने लगे, मेरा आदर करने लगे। शुरू में फौजी ट्रेनिंग और कसरत बहुत कठिन होती है, फौजियों को रोज परेड करनी पड़ती है।

हमारा एक पंजाबी अफसर बहुत सख्त था। वह परेड करती हुई पलटन पर बहुत कड़ी नज़र रखता था। परेड के समय फौजियों को 'लेफ्ट-राइट', 'लेफ्ट-राइट' बोलना पड़ता है लेकिन मेरी जुबान पर हे राम! हे गोविंद! का सिमरन पक चुका था; मेरी जुबान से हे राम! हे गोविंद! ही निकल रहा था।

यह जाप सुनकर हमारा अफसर बहुत क्रोधित हुआ उसने मुझे अकेले ही परेड करने के लिए कहा। उसी समय वहाँ एक बड़ा अंग्रेज अफसर आ गया। उसने हमारे पंजाबी अफसर से पूछा कि यह जवान क्या बोल रहा है? पंजाबी अफसर ने बताया, ''सर! यह जवान साधु प्रवृति का है, सदा भगवान का नाम ही जपता रहता है।'' यह सुनकर अंग्रेज अफसर बहुत खुश हुआ और उसने कहा, ''यह जवान युवक उम्र में मुझसे छोटा है लेकिन मुझे अपने पिता की तरह महसूस हो रहा है।'' उस अफसर ने बहुत श्रद्धा से मेरी तरफ देखा और मेरी परेड माफ कर दी। फिर मुझे जाप करने के लिए ज्यादा समय मिलने लगा।

मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ था और सिक्ख समाज के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करता था। मुझे शुरू से ही गुरुद्वारों और गुरु-ग्रन्थ साहब पर श्रद्धा थी। मैंने एक मिस्त्री से टीन का छोटा सा गुरुद्वारा बनवाया, उसके अंदर गुटखा रखा जिसे मैं सदा अपनी पीठ के पीछे बाँधे रखता था और दिन में दो बार धूप भी जलाया करता था।

फौजी जीवन में यह सब निभाना बहुत मुश्किल है लेकिन मैंने यह सब बहुत प्रेम-प्यार से किया। मैं जब बाबा बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा, आपने कहा, ''अरे भले आदमी! सच्चा गुरुद्वारा तो तेरा शरीर है।'' उन्होंने गुरु ग्रन्थ साहब का यह शब्द मेरे सामने रखाः

हर मंदिर ऐहो शरीर है, ज्ञान रतन प्रगट होए।

यह पढ़कर मैंने अपनी गर्दन नीचे झुका ली। बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''नीचे क्या देखता है? इस मंदिर में जाना है, इस मंदिर की इज्ज़त करनी है।''

आप जानते हैं कि फौज में कई किस्म के लोग होते हैं। धार्मिक आदमी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वहाँ के लोग मुझे सिनेमा देखने के लिए प्रेरित करते लेकिन मैं उनकी इस बात को स्वीकार नहीं करता था। कई बार मैं सिनेमा देखने की बजाय उनकी डयूटी ले लिया करता लेकिन सिनेमा देखने नहीं जाता था। वे लोग सिनेमा की प्रशंसा करते लेकिन उसके दुर्गण नहीं जानते थे।

शराब पीने वाले शराब की बड़ाई करते लेकिन कोई यह नहीं कहता कि शराब बुरी चीज़ है। इसी तरह माँस खाने वाले माँस के फायदे बताकर माँस खाने के लिए प्रेरित करते कि माँस खाने से शक्ति बढ़ती है। मैं उनसे कहता, ''अगर आप शक्तिशाली हैं तो मेरे साथ दौड़ लगाएं।'' मैं कई बार उन लोगों से विनती किया करता, ''भाइयो! आप शोर न करें, मैं अभ्यास कर रहा हूँ।'' वे शोर मचाकर मुझे तंग करने की कोशिश करते लेकिन मैं उनकी तरफ ध्यान नहीं देता था। अपने जाप में मस्त रहता था अगर हम सच्चे दिल से भक्ति करते हैं तो परमात्मा अवश्य ही हमारी मदद करता है।

मेरी स्कूली पढ़ाई कम थी। मैं मेहनत और लगन से तरक्की करता हुआ एक सिपाही से वायरलैस ऑपरेटर के पद पर पहुँचा। मुझे कई इम्तिहान देने पड़े। मैं सदा ही अपने इम्तिहानों में फर्स्ट आया करता था। मैं अपने उस्तादों की बहुत इज्ज़त करता और मेरे उस्ताद भी मेरी इज्ज़त करते थे।

मैं फर्स्ट पटियाला रेजीमेंट में था। मैंने दौड़ के कई मुकाबले जीते। मेरे दिल में कभी यह ख्याल नहीं आया कि कोई मुझसे आगे निकल जाएगा! मैं ऊँची छलांग लगाया करता था। एक दौड़ाक के तौर पर मुझे इंग्लैंड जाने का भी मौका मिला।

एक बार हमारी रेजीमेंट सीमाप्रान्त नशहरा छावनी में थी। वहाँ एक दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उस समय मेरा कद छोटा और शरीर बहुत पतला था। वहाँ पठानों की बटालियन के लोगों ने सुन रखा था कि फर्स्ट पटियाला रेजीमेंट में एक सिक्ख सिग्नेलर है जो बहुत तेज दौड़ाक है; आज उसे देखने का मौका मिलेगा। उनमें एक पठान भी था जो दौड़ में हिस्सा लिया करता था। वह पठान बड़ा मजबूत था उसने बहुत माल-ताल खाया हुआ था।

जब दौड़ लगाने वालों की कतारें लगी तो वह पठान मेरे पास ही खड़ा हुआ था, उसने मुझसे पूछा, ''तुम्हारा नाम अजायब सिंह है?'' मैंने कहा, ''हाँ।'' उस पठान ने कहा, ''क्या खाते हो दाल-रोटी, अन्न के साथ अन्न खाते हो?'' उसने और भी कई मजाक किए लेकिन मैं चुप रहा। फिर वह कहने लगा, ''मेरा दिल करता है कि मैं तुझे बगल में दबाकर दौड़ लगाऊं।'' तब मैंने कहा, ''कोई बात नहीं यह तो वक्त ही बताएगा।''

दौड़ शुरू हुई। हमारी पलटन का साहब भी साथ-साथ चल रहा था जब दौड़ का आखिरी चक्कर आया तो मैंने उस पठान को काफी पीछे छोड़ दिया और मैं दौड़ में फर्स्ट आया; वह पठान सबसे पीछे रह गया।

एक साहब ने मुझसे कहा कि शराब पीने से हौंसला बढ़ता है। तब मैंने उस साहब से कहा कि आपके हौंसले का पता तब चलेगा जब आप लड़ाई में मुझसे आगे निकल जाएंगे। हौंसला तो अंदर ही होता है जो नशा नहीं करता उसका दिमाग ठीक और दिल मजबूत रहता है।

हमारी पलटन में सरबण नामक एक लांगरी (खाना बनाने वाला) हुआ करता था। पलटन के लोग उसकी शिकायत करते कि आज इसने जली हुई रोटियाँ और ज्यादा नमक वाली दाल दी है। सरबण उन लोगों से बहुत दुःखी था। मैं चुपचाप लंगर में जाता जैसा खाना मिलता खाकर चला आता। सरबण ने जानबूझकर एक-दो बार मुझे भी खराब दाल और जली हुई रोटियाँ दी लेकिन मैंने चुपचाप भोजन कर लिया।

एक दिन सरबण ने मुझसे कहा, ''सन्तजी! आपने साहब से मेरी शिकायत तो नहीं की?'' मैंने उसे बहुत प्यार से कहा, ''भाई! जो लोग तुम्हारी शिकायत करते हैं क्या तुम उन्हें अच्छा समझते हो? मैं किसी की शिकायत नहीं करता, सभी लोग अच्छे हैं।''

सरबण ने कहा, ''सन्तजी! मेरा मन चाहता है कि मैं आपकी सेवा करूं। अब आपको लंगर में आने की जरूरत नहीं। आपका फुल्का, चाय आपकी चारपाई पर ही पहुँच जाया करेगा।'' वह रोजाना सुबह चाय लेकर मेरे पास आ जाता। सरबण का फौज में 3212 नम्बर था। मैं उसे 3212 कहकर ही बुलाता था।

सरबण एक दिन सुबह चाय लेकर आया तो मैंने उसे प्यार से कहा, ''भाई 3212 ! तुम मेरी बहुत सेवा करते हो, तुम्हारी शादी हो जाए, तुम्हें ऐसी पत्नी मिले जो तुमसे चाय बनवाया करे।'' सरबण का रंग काला था और वह खूबसूरत भी नहीं था। उसने कहा कि सन्तजी ! कोई अपनी बेटी से तो मेरी शादी नहीं करेगा अगर कोई भागी हुई औरत पीछे से ही लड़की साथ लाई हो तो भले ही उस लड़की से मेरी शादी हो जाए। इस तरह हम दोनों में दिल्लगी चलती रहती।

मैंने फौज की नौकरी छोड़ दी और सरबण भी नौकरी छोड़कर अपने गाँव चला गया। सरबण की अच्छी जमीन-जायदाद थी। उसकी शादी भी हो गई। सरबण के गाँव के एक मिस्त्री के साथ मेरी जान-पहचान थी। वह मिस्त्री मुझसे मजाक में कहता, ''आप शराब के खिलाफ हैं। भला फौज में भी कोई शराब के बिना रह सकता है; मैं इस बात को नहीं मानता।'' आखिर बातों-बातों में सरबण का जिक्र आया तो मिस्त्री ने कहा कि सरबण मेरे गाँव में रहता है। मिस्त्री ने सोचा जब सरबण आएगा तो सन्तजी की पोल खुलेगी। मिस्त्री ने सरबण को बुलाने के लिए अपने लड़के को भेजा।

सरबण की शादी ऐसी औरत से ही हुई जो उससे चाय बनवाया करती थी। सरबण कभी-कभी परेशान होकर अपनी पत्नी से कहता,

''मैंने फौज में एक सन्त की सेवा करके तुम्हें पाया है। वह सन्त कहा करते थे कि तुझे ऐसी पत्नी मिले जो तुझसे चाय बनवाया करे।''

जब सरबण के पास मिस्त्री का लड़का पहुँचा तो वह मुझसे मिलने आया। उसके दिल में मेरे लिए बहुत इज्जत थी, उसने दूर से ही अपने जूते उतार दिए और मेरे चरणों में आकर गिर पड़ा। मैंने उसे अपने गले से लगाया। मिस्त्री हैरान होकर देखता रहा।

सरबण मुझे अपने घर लेकर गया। उसकी पत्नी ने श्रद्धा से मुझे नमस्कार किया और चाय बनाकर लाई। मैंने उसकी पत्नी से पूछा, ''सुनाओ भाई ! तुम्हारी गृहस्थी का क्या हाल है?'' उसकी पत्नी ने कहा कि चाय तो रोज यही बनाता है, मैं कभी-कभी इससे रोटी भी बनवा लेती हूँ।

हमारी रेजीमेंट में एक बार पहरेदारों की मिलीभगत से बंदूकों की चोरी हुई। हमारी पलटन का कमांडर बहुत परेशान था क्योंकि कुछ निर्दोष लोगों को सजा मिलने जा रही थी। उस समय कमांडर ने एक युक्ति सोची। फौज में सभी लोग मुझे सन्तजी कहते थे और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। कमांडर ने मुझे अपने पास बिठा लिया और लगभग पन्द्रह सौ जवानों से कहा, ''अपनी सच्चाई का प्रमाण देने के लिए सन्तजी को हाथ लगाकर कहें कि मैंने चोरी नहीं की।''

हर जवान ने मेरे शरीर को स्पर्श करके कसम खाई लेकिन उनमें से चार जवान मेरे सामने आते ही काँपने लगे। उनकी मेरे शरीर को स्पर्श करने की हिम्मत नहीं हुई। इस तरह कमांडर ने युक्ति से चोरी का पता लगा लिया।

एक बार हमारी रेजीमेंट में इंग्लैंड से एक रिटायर्ड मेजर जादूगर आया। उसने जादू के कई करतब दिखाए, लोग उससे बहुत प्रभावित हुए। उसने एक हाथ में चिड़िया को पकड़कर दूसरे आदमी से उसका सिर काटने के लिए कहा। लोगों ने देखा कि चिड़िया मर गई और

धरती पर खून गिर रहा है। कुछ देर बाद उसने चिड़िया के दोनों भागों को जोड़कर उसे उड़ा दिया। फिर उसने लकड़ी का बुरादा मंगवाकर उस बुरादे को चीनी में बदल दिया। उस चीनी की चाय बनाकर अफसरों को पीने के लिए दी गई। जब उन्होंने चाय की पहली चुस्की ली तो उनसे पूछा क्या चाय मीठी है? तब उन अफसरो ने कहा कि हाँ यह चाय मीठी है, जब उन्होंने दोबारा चुस्की ली तो वह लकड़ी का बुरादा था। जादूगर ने कहा, ''मैं यह खेल बांसुरी से करता हूँ, मेरी सारी शक्ति इस बांसुरी में है।''

मैंने उस जादूगर को तंग करने की बात सोची। मैंने अपने मन की एकाग्रता से उसकी बांसुरी को बाँध दिया। जब जादूगर ने बांसुरी बजानी चाही तो बांसुरी नहीं बजी। वह बहुत परेशान हुआ और उसने हमारे कमांडर से कहा कि आपकी फौज में कोई ऐसा आदमी है जो कुछ शक्ति रखता है, उसने मेरी बांसुरी को बाँध दिया है। मैं उससे प्रार्थना करता हूँ कि वह अपनी शक्ति हटा ले नहीं तो मैं आगे खेल नहीं दिखा सकूंगा। उसकी प्रार्थना सुनकर मैंने अपनी शक्ति को हटा लिया।

जादूगर ने कहा, ''आपको यह नहीं समझना चाहिए कि यह सच्चा जादू है। यह भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं मुर्दे में जान डाल सकता हूँ अगर मैं ऐसा कर सकता तो इंग्लैंड के राजा-रानी मुझे अपनी सेवा में रख लेते यहाँ नहीं आने देते। मैं यह सब लोगों को प्रभावित करने के लिए अपने मन की एकाग्रता से करता हूँ।''

एक बार हमारी रेजीमेंट लाहौर में थी तब जवानों के मनोरंजन के लिए नाचने-गाने वाली एक मंडली आई। उनमें एक आदमी, स्त्री के कपड़े पहनकर नाच रहा था। मैंने भोलेपन में अपने साथियों से कहा, ''यह स्त्री कितनी बहादुर है कि आदमियों के साथ नाच रही है।'' मेरे साथियों ने कहा कि यह आदमी है इसने स्त्रियों वाले कपड़े पहन रखे हैं। मैंने सोचा! यह आदमी थोड़े से पैसों के लिए स्त्री बनकर नाच रहा है। इसने चंद पैसों के लिए अपने आपको कुर्बान कर रखा है।

मेरे दिल में ख्याल आया कि मैं युगों-युगों से परमात्मा से बिछुड़ा हुआ हूँ। इसी तरह मुझे भी परमात्मा को पाने के लिए अपने आपको कुर्बान करना होगा। मैंने इस बात से गहरा सबक लिया। जवानों ने उस आदमी को एक-एक रुपया दिया लेकिन मैंने उसे दस रुपये दिए।

मोर्चे पर जाने से पहले मैं बाबा बिशनदास जी से मिलने गया। मुझे उस साधु ने जो कुछ कहा था मैंने वह सब बाबा बिशनदास जी को बताया। बाबा बिशनदास ने कहा, ''स्वर्गों में क्या है? स्वर्गों में भी मौत-पैदाईश, लड़ाई-झगड़ा और प्यार-नफरत है। एक देवता दूसरे देवता को देखकर जलता है। वहाँ भी भोग हैं। तुमने स्वर्गों में नहीं जाना, तुम्हारा रास्ता ऊपर है। लड़ाई में कर्त्तव्य पालन के लिए ही जाएं।''

फौज के दौरान मेरी ड्यूटी पटियाला रियासत में थी। वहाँ का राजा बीमार था। महल के चारों तरफ फौज का सख्त पहरा था। राजा की मौत हो गई। किसी को पता ही नहीं चला कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान पकड़कर ले कहाँ गया? मेरे अंदर मौत का रहस्य और भी गहरा हो गया, इसका हल तभी समझ आया जब मैं महाराज कृपाल के चरणों में पहुँचा।

हमारी पलटन का जनरल विक्रम सिंह बहुत ही धार्मिक व्यक्ति था। वह साधु-सन्तों से मिलकर बहुत खुश होता था। उसका मेरे साथ बहुत प्यार था। एक बार हमारी पलटन ब्यास गई तब वह महाराज सावन के दर्शनों के लिए गया। महाराज सावन सिंह जी उसे अपने बराबर कुर्सी पर बिठाना चाहते थे लेकिन वह नीचे धरती पर ही बैठा।

सन् 1947 में देश का बँटवारा हुआ, उस समय हिन्दु-मुस्लिम दंगे हुए। हमारी पलटन को भी व्यवस्था कायम करने में लगाया गया। उस समय हमने बहुत से मुसलमानों की रक्षा करके उन्हें सुरक्षित सीमा पार पहुँचाया और उनकी सम्पत्ति लुटने से बचाई। उस समय कट्टर सिक्ख भाईयों का विचार था कि इन मुसलमानों ने हमारे गुरुओं को तंग किया और उनके बच्चों का कत्ल किया। मैंने सिक्ख भाइयों को

प्यार से समझाया, ''यह तो उस समय के मुगल शासकों ने किया। इन बेचारे मुस्लमान भाइयों का क्या कसूर है?''

हमारा एक कमांडर भी मुसलमान था। हमने उसके परिवार की रक्षा की और उसे सुरक्षित पाकिस्तान पहुँचाने में मदद की। जब वह मुझसे विदा लेने लगा तो उसकी आँखें श्रद्धा से भर आई और उसने कहा, ''सन्तजी ! आपके अंदर मुझे खुदा का नूर दिखाई देता है।'' मैंने उसे प्यार से विदाई देते हुए कहा, ''साहब ! मैंने आप पर कोई एहसान नहीं किया, मैंने तो सिर्फ अपना फर्ज पूरा किया है।''

देश आजाद होने पर दिल्ली में लालकिले पर झंडा फहराया गया। हमारी पलटन उस सलामी में शामिल हुई। समारोह के बाद हमारी पलटन को दिल्ली की सैर करवाई गई। हम लोग दिल्ली के एक मशहूर मंदिर में गए। मैं जैसे ही मंदिर में गया वहाँ मैंने कबीर साहब की मूर्ति देखी। मुझे बहुत अफसोस हुआ कि जिस महात्मा ने सारी जिंदगी मूर्तिपूजा के खिलाफ संघर्ष किया अब लोगों ने उसी महात्मा की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करनी शुरू कर दी है।

देश आजाद होने पर रियासतें खत्म हो गई। मैं पटियाला रियासत की सेना में था। उस समय सरकार ने यह विकल्प रखा कि जो सेना में रहना चाहे वे भारतीय सेना में भर्ती हो जाए और जो घर जाना चाहे वे ग्रेच्युएटी लेकर अपने घर जा सकते हैं। मैं फौज से रिटायर हो गया।

मेरी खोज जारी रही, मैं अनेक महात्माओं से मिला लेकिन मुझे किसी में भी बाबा बिशनदास जी जैसे गुण नहीं मिले। मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में रहना चाहता था ताकि मेरा उद्धार हो सके लेकिन विधि को कुछ और ही मंजूर था। बाबा बिशनदास जी ने मुझे घर जाकर अपने माता-पिता का बोझ ढोने और उनकी सेवा करने का आदेश दिया। पहले तो मैंने यह स्वीकार नहीं किया लेकिन जब बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिछले जन्म के बारे में बताया और पिछले जन्म की हड्डियाँ भी निकालकर दिखाई तो मैं चुपचाप अपने घर की तरफ चल पड़ा।

h c h

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 16, 17 व 18 मई - 2008 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि नीचे लिखे पते पर पहुंचकर लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,बेहरा इन्कलेव,

पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक),

नई दिल्ली - 110 087

समय सारणी

सुबह	3.00 से 5.30	भजन-अभ्यास
सुबह	7.00 से 8.00	भजन-अभ्यास
सुबह	10.00 से 11.00	शब्द गाने का कार्यक्रम
सुबह	11.00 से 12.00	सतसंग
दोपहर	12.00 से 12.45	भजन-अभ्यास
शाम	4.00 से 5.00	भजन-अभ्यास
शाम	6.30 से 7.30	सतसंग
रात	8.30 से 9.00	शब्द गाने का कार्यक्रम

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

98101-94555, राकेश कालिया
98107-94597, सोनू सरदाना
98182-01999, सुरेश चोपड़ा
98102-12138 राकेश शर्मा